International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 5 January – February - 2026

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा का महत्व

प्रो. (डॉ.) एम. जे. शिवदास

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सदगुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

DOI - 10.5281/zenodo.18899155

सारांश :

हिंदी हमारे भारत देश के बडे भू-भाग में बोली जानेवाली संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में स्वीकृत की गई है। हिंदी का प्रशासन में अधिक प्रयोग होने के हेतु प्रशिक्षण, कार्यशाला और संगोष्ठि जैसे विभिन्न माध्यमों से कर्मचारियों के बीच प्रचारित और प्रसारित करने के प्रयास हो गये है। यह भाषा व्यापक रूप में संपर्क भाषा, विज्ञापन की भाषा, मीडिया की भाषा, रोजगार की भाषा, अनुवाद की भाषा, सिनेमा-रेडियो की भाषा, सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में अपना योगदान दे रही है। हमारे देश का आर्थिक परिवेश दिनों-दिन तेजी से परिवर्तित हो रहा है। व्यापार और उत्पादन, महाजालीय माध्यम से और फैल रहे हैं। टूजी से लेकर फाइव जी तक क्रांति हो गई है। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स जैसे खोजों से भाषा भी और देश भी तरक्की कर रहा है। आज बुद्धिमान व्यक्तियों की भांति संगणक को परिचालन देकर जो चाहिए वह अनुमान निष्कर्ष निकाले जाने की बात आसान हो गई है।

बीज शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सूचना प्रौद्योगिकी, महाजालीय माध्यम

भाषा अपने अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। भाषा व्यक्ति और समाज की अस्मिता का स्त्रोत है। इस भाषा के सहारे विज्ञापनों को भी तैयार किया जा सकता है। बाजार सर्वेक्षण के आधार दूरदर्शन के साबुन, टुथपेस्ट या नित्य उपयोगी उत्पादनों की खपत अधिक दुगुनी-तिगुनी हुई है। बहुराष्ट्रीय कंपनिया विभिन्न देशों में अपने उत्पादों की खपत के लिए नए-नए स्त्रोतों को सदा तलाशती रही है। हिंदी के प्रतिथयश रचनाकार डॉ. दामोदर खडसे जी ने 'बैंकों में हिंदी: विविध आयाम' इस किताब में लिखा है "अमेरिका से भारत दौरे पर आए माइक्रोसॉफ्ट के प्रमुख बिल गेट्स ने मुंबई में कहा था कि भारत को हिंदी सॉफ्टवेअर की आवश्यकता है और यह आवश्यकता पूरी करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट तैयार है।"[1]

हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार जोर-शोर के साथ शुरू है। आज के युग में यह साहित्य की भाषा होते हुए विश्वपटल पर सांप्रदायिक आदान-प्रदान की भाषा रही है। इस भाषा को एक हजार वर्ष का इतिहास है। आज प्राचीन इतिहास, मध्यकालीन भक्ति साहित्य प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है।

विदेशों में लगभग 154 देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। अप्रवासी भारतीयों के अलावा स्थानीय छात्र भी हिंदी का अध्ययन करते है। हिंदी का अध्ययन साहित्य-संस्कृति और भाषा के रूप में प्रमुखता से किया जाता है। आज हिंदी एक व्यावसायिक-व्यावहारिक भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। हिंदी साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति, मान्यताओं, भावनात्मक धरोहरों का अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया जाता है। रोजी-रोटी के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी को अपनाया जा रहा है। विदेशों में हिंदी सांस्कृतिक दूत का काम करती रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता:

वैश्विक स्तर पर कही ना कही परिवर्तन होता रहता है। हमारे भाषा वैज्ञानिक तथा साहित्यकार नई-नई खोज करते है। कई भाषाएँ और बोलियाँ काल के प्रवाह में मिटती है तो कई नई तरीके से निर्माण होती है। इ.स. 2000 के बाद हमारे संगणक कैसे काम करते रहेंगे इस बारें में चिंता चल रही थी। आज पच्चीस साल गवा दिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी के जमाने में एक नयी संकल्पना सामने आ रही है- 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता'। इसके बारें में खूब चर्चा चल रही है। विज्ञान हर समय नये खोज की निर्मिति करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समाज के लिए साहित्य के लिए कैसा उपयोग होता है इसके बारें में सोचना अधिक महत्वपूर्ण होगा। संगणक के द्वारा रोबोट (कृत्रिम साधन) को कई कमांउ देकर इसी परिचालन के अनुसार कृति कराने के लिए लगाना याने 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' या 'आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स' ही है। 'आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स' के बारें में सन् 1940 से संशोधन आरंभ हुआ, ऐसा मत अच्युत गोडबोले जी ने लगाया।"[2] इसी AI तंत्रज्ञान का इस्तेमाल आज हर एक क्षेत्र में हो रहा है। कई ऑफिसेस, कारखाने, दुकान, यातायात, आरोग्य, मनोरंजन जैसे क्षेत्र में तीव्र गति से उपयोग हो रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) इस सदी की सबसे प्रभावशाली तकनीकी अवधारणा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उद्देश्य ऐसी मशीनों और प्रणालियों का विकास करना है जो मानव बुद्धि की भाँति सोचने, सीखने तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम हो। यह तकनीकी और मानवीय क्षमता का विश्लेषण निर्माण करता है। AI मानव जीवन के लिए एक अत्यंत उपयोगी उपकरण है।

AI खोज के बारे में इंटरनेट के सहारे से जानकारी प्राप्त होती है कि इसे इ.स. 1956 में जॉन मैकार्थी ने पहली बार 'Artificial Intelligence' शब्द का प्रयोग करते हुए इसे बुद्धिमान मशीनों के निर्माता का विज्ञान और अभियांत्रिकी कहा। एलन हयूरिंग ने 'हयूरिंग टेस्ट' के माध्यम से यह विचार प्रस्तुत किया कि यदि कोई मशीन मानव जैसी प्रतिक्रिया दे सके तो उसे बुद्धिमान माना जा सकता है। इस प्रकास AI मानव बुद्धि का कृत्रिम रूप है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपयुक्तता:

आधुनिक युग में मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में जैसे- प्रशासन, संचार, साहित्य, चिकित्सा, उद्योग व्यापार, सामाजिक विज्ञान को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। AI शिक्षा प्रणाली को अधिक छात्र केंद्रित बनाया है। स्मार्ट क्लासरूम, व्यक्तिगत शिक्षण, ऑनलाइन शिक्षण और संशोधन-सहायता प्रणाली में शिक्षा की गुणवत्ता में विकास हो रहा है।

चिकिस्ता क्षेत्र- रोग निदान, मेडिकल इमेंजिंग, दवा और रोबोटिक सर्जरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसमें स्वास्थ्य सेवाएँ अधिक सटीक और सुलभ बनी है।

भाषा, साहित्य और शोध- AI के माध्यम से साहित्यिक पाठों का विश्लेषण, अनुवाद, डिजिटलीकरण और शोध कार्य संभव हुआ है। जिससे मानविकी विषयों को नई दिशा मिली है।

उद्योग और व्यापार- उत्पादन नियंत्रण, ग्राहक सेवा, स्वचालन आपूर्ति श्रृंखला में AI के द्वारा मदत मिल सकती है। वह कार्य अधिक सुचारू ढंग से पूरा किया जा सकता है।

प्रशासन और शासन- डेटा विश्लेषण, ई-गवर्नेस, नीति-निर्माण में AI ने समय और श्रम की बचत होती है। कृषि में स्मार्ट तकनीक, परिवहन में स्वचालन और संचार में AI की सामाजिक उपयोगिता सिद्ध होती है। दिव्यांग व्यक्तियों ओर वंचित वर्गों के लिए भी सहायक तकनीक बन सकती है।

स्पष्ट है AI तकनीक आधुनिक युग के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। इसी AI तकनीक के कारण पारंपरिक नौकरियाँ, सेवाएँ समाप्त होने की आशंका है इससे सामाजिक संतुलन बिगड सकता है। इसका विकास मानव केंद्रित दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। आधुनिक युग में शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय, साहित्य आदि क्षेत्रों में मानव जीवन का अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है किंतु उसका उपयोग मानवीय कल्याण के उद्देश्य से करना चाहिए। AI तकनीक में मानवीय करूणा, नैतिक विवेक और भावात्मक समझ का अभाव होता होगा। इसका सामाजिक और मानवीय मूल्यों की सीमा में विकसित प्रयोग करना चाहिए।

संदर्भ सूची:

1. खडसे डॉ. दामोदर- बैंकों में हिंदी: विविध आयाम, आधार प्रकाशन पंचकूला (हरियाणा) प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ 104
2. गोडबोले अच्युत- आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स, बुकगंगा प्रकाशन पुणे 04, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ 125